श्रीः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

श्री ऊत्तुक्काडु वेङ्कटकवि रचितम्

॥ श्रीरङ्गनाथ पञ्चकम् ॥

This document has been prepared by*

Sunder Kidambi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness *śrīmad āṇḍavan* of *śrīraṅgam*

*This was typeset using LaTeX and the **skt** font. Our sincere thanks to Smt. Vidya Soundarajan of Jakarta, Indonesia, for providing us the text of this stotram. Our sincere thanks to Sri. Sundar Varadarajan of Chennai for proofreading this text.

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ श्रीरङ्गनाथ पञ्चकम् ॥

स्वीयतर भासकर चन्द मणियुक्त फण मण्डित भुजङ्ग शयनम्
मेघवर वासक सुवर्णगिरि सौभग पराभवमनन्त रुचिरम्।
लीनकर छन्द भुवनत्रय मुदाकर शुचिमधिक भूषणकरम्
नौमि भगवन्त मुख मन्द हसनन्तमति सुन्दरमनन्त शयनम्॥ १॥

रूपमव बोधमति नूतन मनोज्ञ मदनं भुवन मङ्गळकरम्
वारिधि सुधाकर सुताकर सुखातुर सुमाधुर सुशीलन पदम्।
भूत महदादयमलङ्कृत कळेबरमखण्ड करुणालय मुखम्
नौमि भगवन्त मुख मन्द हसनन्तमति सुन्दरमनन्त शयनम्॥ २॥

राचर चराचर पराधिक दुराकृति मुरादि पटु भीकर तनुम्
नारद वरादि नुत नीरद निभाकर मनोरथ सुमाधुर पदम्।
नादयुत गीत परवेद निनदानघ सनातन जनाधिक वृतम्
नौमि भगवन्त मुख मन्द हसनन्तमति सुन्दरमनन्त शयनम्॥ ३॥

सिद्धसुर चारण सनन्द सनकादय मुनीन्द्र गण घोषणपरम्
नित्य रचनीय वचनीय रसनीय रमणीय कमनीयत परम्।
पद्मदळ भास मकरन्द परिहास निजभक्त भव मोचनकरम्
नौमि भगवन्त मुख मन्द हसनन्तमति सुन्दरमनन्त शयनम्॥ ४॥

हेम मकुटादि कटकाभरण कङ्कण समुज्ज्वल मनोहर तनुम्
गीत नटनादय कलावृत सुधामृत निरञ्जन सुमङ्गळकरम्।
भागवत राम चरितामल धुरीण वचनादि परिपूरितकरम्
नौमि भगवन्त मुख मन्द हसनन्तमति सुन्दरमनन्त शयनम्॥ ५॥

॥ इति श्रीरङ्गनाथ पञ्चकं संपूर्णम्॥

www.prapatti.com